**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना**

**मो० न० 9546743796**

**Email-** [**mishrasm966@gmail.com**](mailto:mishrasm966@gmail.com)

**B. A. III**

**काव्यक प्रयोजन**

**एहि प्रकार सँ भारतीय आचार्यक काव्य – प्रयोजन सभकें ध्यान सँ देखैत छी त ज्ञात होइत अछि जे काव्यक प्रयोजन निम्नलिखित अछि :-**

**1 यश**

**2 अर्थ**

**3 व्यव्हार ज्ञान**

**4 शिवेतर क्षति अथवा अनिष्ट निवारण**

**5 सद्यः परिनिवृति**

**6 कान्ता सम्मितयोपदेश**

**1 यश - यशक कामना प्रत्येक लोककें होइत छैक | एहि हेतु कहल गेल अछि जे यश कोनो महान व्यक्तिक दुर्बलता होइत अछि – “ Fame is the last infirmity of noble minds . “**

**यश एक प्रधान प्रेरक तत्व अछि | कालिदास , भवभूति , विद्यापति आदि कवि लोकनि यशेक लेल काव्यक सृजन कएने छलाह | भर्तृहरिक अनुसार कविक भौतिक शरीर नष्ट भए जाइत अछि | मुदा जरा – मरण सँ रहित यश: शरीर अमर रहैत अछि :-**

**“ जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वरा: |**

**नास्ति येषां यश:काये जरामरणं भयम ||**

**अर्थात ओहि रस सिद्ध कवीश्वर लोकनिक हम जयगान करैत छी जनिक यश – रूपी शरीर कें ने त वृद्धावस्थाक भय अछि आ ने मृत्युक डर |**

**एतावता ज्ञात होइत अछि जे यश एक दिश कविक कृतित्वक श्रमक अनुपमेय पुरस्कार अछि त दोसर दिस ओकरा अमरता प्रदान करबाक साधन सेहो | एहि हेतु काव्यक सृजनक एक प्रधान प्रयोजन आ प्रेरक तत्व यश अछि |**

**2 अर्थ : - काव्यक भौतिक प्रयोजन सभमे सबसँ वेशी महत्वपूर्ण अर्थ अछि , किएक त संसार मे प्रत्येक व्यक्तिकें एकर आवश्यकता होइत अछि | श्री हर्ष कें प्रचुर धन भेटल छलनि | विद्यापति कें काव्यक बदौलति बिसपी गाम भेटल छलनि | बिहारी कें एक दोहा पर एक मोहर भेटैत छलनि | अंग्रेजीक एक प्रसिद्ध उपन्यासकार स्कोर्त कर्ज चुकएबाकहेतु उपन्यास लिखने छलाह | रीतिकालीन कवि लोकनि अर्थ प्राप्तिक हेतुए काव्यक सृजन करैत छलाह वर्तमानकाल मे सेहो कवि काव्यक सृजन अर्थ प्राप्तिक हेतु करैत छथि | वस्तुतः कहबाक तात्पर्य ई अछि जे प्राचीन – काल सँ लए आधुनिककाल धरि त काव्यक एक प्रमुख प्रयोजन अर्थ प्राप्ति त रहबे कएल अछि आ भविष्य मे सेहो काव्यक एक प्रमुख प्रयोजन अर्थ प्राप्ति रहत |**

**3 व्यवहार ज्ञान :- काव्य सँ व्यवहारिक ज्ञानक प्राप्ति सेहो होइत अछि | एहिसँ लोक व्यवहारक ज्ञान पाठक कें होइत अछि | कवि पाठकक समक्ष अपन जीवनक अनुभव पर आधारित आदर्श सभक प्रतिपादन करैत छथि | विद्यापति , चंदा झा , लालदास आदिक काव्य सँ तत्कालीन रीति – व्यवहारक सहज ज्ञान भेटैत अछि |**

**4 शिवेतर – क्षति :- काव्यसँ अनिष्टक निवारण सेहो होइत अछि | काव्य – स्तुति सभक द्वारा अनेक कविगण अपन कष्टक निवारण कएलनि अछि | कहल जाइत अछि जे मयूर भट्टक अपन सूर्य शतकक रचना कए अपन कुष्ठ रोगसँ त्राण पएने छलाह | गोस्वामी तुलसीदास हनुमानबाहुक रचना अपन बाहुपीड़ाक निवारणक हेतु कएने छलाह | एहि क्रमसँ आधुनिक प्रगतिवादी कवि आ लेखक लोकनिक रचनासँ व्यक्ति आ समाजक कष्टक निवारण होइत अछि | राष्ट्रीयताक भावनाक प्रसार सेहो काव्यक माध्यमसँ होइत अछि | एतावता ज्ञात होइत अछि जे काव्यक एक प्रमुख प्रयोजन अमंगल निवारण रहैत अछि | एकर अर्थ ई अछि जे काव्यक एक प्रमुख प्रयोजन धर्म सेहो अछि | अनिष्ट निवारणक निमित्त**

**धार्मिक भावक प्रधानतासँ युक्त काव्यमे अनिष्ट निवारणक भावना रहैत अछि |**

**5 सद्यः परिनिवृति :- सद्यः परिनिवृतिक अर्थ होइत अछि परमान्दक अनुभूति | काव्यक आस्वादनसँ जे रसरुपी आनन्द भेटैत अछि वएह काव्यक लक्ष्य अछि – “ सह्रदस्य तु काव्य – श्रवणान्तरमेव सकल प्रयोजनेषुत्तमं स्थायिभावास्वादत समदभूतं वेदान्तरसम्पर्कशून्यं रसास्वाद रूपमानंदनम “ इएह काव्यस्वाद जन्य आनंद सभ प्रयोजन कें प्रयोजन अछि | एहिमे ज्ञाता , ज्ञेय आ ज्ञानक भेद असीमित रहैत अछि तथा ओ विभादिक वर्णन आ ओकर चर्वणसँ निष्पन्न होइत अछि | एहि हेतु कविता कए मम्मट ‘ नवरसरुचिरा ‘ तथा ‘ ह्लादैकमपि ‘ कहलनि अछि | काव्योत्पन्न आनंद पाठक आ कवि दुनू कें भेटैत अछि | ई आनंद जीवनक विषमता एवं वेदना कें दूर कए शांतिक साम्राज्यक स्थापना करैत अछि |**

**6 कान्तासम्मिततयोपदेश :- पत्नीक सदृश मधुर उपदेश देब सेहो काव्यक प्रयोजन अछि | अनेक सन्त, महात्मा लोकनिक रचना एहि कोटि मे अबैत अछि | शास्त्रमे उपदेश देबाक तीन प्रकारक शैली मानल गेल अछि – प्रभुसम्मित , सुहृदसम्मित , कान्तासम्मित | प्रभुसम्मित शब्दमे आज्ञा रहैत अछि आ नीक – अधलाह बातक निर्देश रहैत अछि | वेद शास्त्रादिक उपदेश एहि श्रेणीमे अबैत अछि | सुहृदसम्मितमे आज्ञा नहि भएकें भावना होइत अछि | एहि श्रेणीमे इतिहास , पूरण आदिक उपदेश अबैत अछि | कान्तासम्मित वाक्यमे प्रेमोपदेश अबैत अछि | ई सरस होइत अछि | वास्तवमे काव्यक उपदेश शर्करामे लेपटाएल कुनैनक गोलीक समान होइत अछि | जहिना कोनो प्रिय अपन रसपूर्ण वाणी आ मोहकताक जादू चलाए प्रियतम कें वशीभूत कए लेत अछि तहिना कोनो सरस रचनाक माधुर्य कें पान कए पाठक काव्योपदेशक दिश आकृष्ट भए जाइत अछि |**

**वास्तविकमे काव्यक प्रयोजनक सभ अंग पर विचार कएलासँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे संसारमे निष्प्रयोजन केओ किछु नै करैत अछि | अतएव काव्यक उपर्युक्त प्रयोजन कविकें काव्य – सृजन करबाक प्रेरणा देत अछि आ ओ ‘ सत्यं शिवम् सुन्दरम् ‘ क निर्मल धरा प्रवाहित करैत रहैत छथि |**